कव्वाली

गर उठा दो आज पर्दा दुई की दीवार से
देख लें जी भर के हम भी आज तुमको प्यार से

1– है तड़फ में यहीं हसरत तेरे ही दीदार की
खाली जायेंगे भला हम कैसे इस दरबार से

2– जहे किस्मत साथ दे दीदार हो महबूब का
भर के झोली प्यार की ले जायेंगे भण्डार से

3– तूं अगर आ जाये तो मिट जायें सब रूहों के गम
पूर सकून मिल जायेगा फिर तेरे दीदार से

4– हालें दिल आज सुनायेंगे अकेले बैठ कर
आज फिर से होंगी बातें राज की सरकार से